सन्मार्ग
रविवार
4 अगस्त 2019

'आषाढ़स्य प्रथम दिवसे' कह कर जिस आषाढ़ का स्वागत लोग किया करते थे, वह बीत चुका है। सावन देहरी पर पाहुन की तरह खड़ा है। ये भीगने भिगोने के दिन हैं। ये धान के दिन हैं, मेह के दिन हैं, बारिश के दिन हैं...

सन्मार्ग रविवारीय
04 AUG 2019

2 | अंकुर
3 | कलरव
4 | विविधा
5 | अक्षर
6 | दर्शन
7 | अपराजिता
8 | आखिरी पन्ना

'ईमानदारी व मेहनत का कोई तोड़ नहीं है'- आरडी शर्मा

गुरुमंत्र

जिन अभिभावकों के पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं है, उन्हें अभिभावक बनना ही नहीं चाहिए। अभिभावक बने हैं तो उस दायित्व को सही तरह से निभायें एवं बच्चे का उसके हर कदम पर साथ दें। वहीं कई अभिभावक ऐसे हैं जिनके पास बच्चों के लिए समय ही नहीं होता है। ऐसे अभिभावकों के पास बच्चों के लिए समय नहीं है तो कल बच्चों के पास उनके लिए समय का अभाव हो जायेगा। इस स्थिति से बचने के लिए बच्चों के साथ अभिभावकों को उचित समय बिताना चाहिये। यह कहना है दिल्ली पब्लिक स्कूल आसनसोल के **प्रिंसिपल आरडी शर्मा** का। उन्होंने कहा कि अभिभावक, बच्चे एवं शिक्षक का ऐसा रिश्ता होना चाहिए कि बच्चा अपनी सभी परेशानी उन्हें बता सकें। सन्मार्ग की अंकुर टीम ने गुरुमंत्र स्तंभ के लिए प्रिंसिपल से बातचीत की। पेश है बातचीत के मुख्य अंश--

क्या चुनौतियां देखते हैं आप?

वर्तमान समय में बच्चों को लेकर लगायी जा रही अकारण रोक से बच्चों व शिक्षकों के बीच आत्मीय रिश्ता नहीं बन पा रहा है, इसे भी समझने की जरूरत है जिसे नजरअंदाज किया जा रहा है।

इस स्कूल से कब से जुड़े हैं ?

लगभग 5 वर्ष से इस स्कूल के साथ जुड़ा हूं। यह स्कूल आसनसोल में शिक्षा की दशा व दिशा बदल रहा है। कई बेहतर कार्य कर रहा है।

शिक्षा में आप क्या बदलाव देख रहे हैं ?

काफी बदलाव आयें हैं। पढ़ने व पढ़ाने के तरीकों में काफी बदलाव आया है। एक बच्चा आज विभिन्न क्षेत्रों की जानकारी रखने लगा है।

कई ऐसे बच्चे हैं जो काफी पढ़ने के बाद कुछ कर नहीं पाते। ऐसे बच्चों के लिए क्या करना चाहिए ?

देखिये, ऐसा काफी बच्चों के साथ होता है। इसमें बच्चों की कोई गलती नहीं है पर उसे सही उत्साह एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता है। अब तो सीबीएसई ने स्कूलों को एक काउंसलर रखने का निर्देश दिया है। वह काउंसलर यह देखेगा कि पढ़ाई में जो बच्चा कमजोर है, उस बच्चे को कैसे रास्ते पर लाया जाये, इस पर ध्यान देना होगा। बच्चे अगर खेलना चाहते हैं तो एक निर्धारित समय तक उन्हें खेलने दें, उन्हें रोकें नहीं। समय का ध्यान रखें पर बच्चों से उनका बचपना न छीनें।

एक्स्ट्रा करिकुलम एक्टिविटी कितना जरूरी है ?

एक्स्ट्रा करिकुलम एक्टिविटी बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए काफी आवश्यक है। इससे जहां बच्चों का दिमाग विकसित होता है, वहीं वह विभिन्न क्षेत्रों से परिचित होता है। यह काफी महत्वपूर्ण है।

स्कूलों में बच्चों को गलती करने पर सजा देने के मुद्दे पर आपकी क्या राय है ?

देखिये कुछ घटनाओं को छोड़ दिया जाये तो शिक्षक कसाई नहीं होते हैं। वह बच्चों को पहले जो सजा देते थे, वह उसके भविष्य के लिए वरदान साबित होता था पर अब इस मुद्दे पर रोक लगा दिये जाने से पूरा मामला ढीला-ढाला पड़ गया है। साथ ही मेरा मानना है कि विद्यार्थी व शिक्षक के बीच किसी तीसरे को नहीं आना चाहिए। उनके बीच का रिश्ता काफी मजबूत व विश्वास का होना चाहिए ताकि बच्चा अपनी कमजोरी को शिक्षक के सामने रख सके और शिक्षक उस समस्या को दूर कर सके।

इन दिनों हॉस्टल की परंपरा बढ़ रही है, इस पर क्या कहेंगे ?

मेरा मानना है कि हॉस्टल परंपरा की अगली कड़ी के रूप में वृद्धाश्रम भी है। आज जो अभिभावक अपने बच्चों को हॉस्टल में डालकर यह समझते हैं कि वे निश्चिंत हो जायेंगे तो वे भूल रहे हैं, कल उनका बच्चा भी उन्हें वृद्धाश्रम में डाल कर निश्चिंत हो जायेगा। बच्चे के साथ अभिभावक का एक इमोशनल अटैचमेंट अति आवश्यक है और यह आपसी लगाव से बनता है। कई अभिभावक अब बच्चों को गोद में नहीं लेते। इस कारण अभिभावकों का बच्चों से दिली लगाव दूर होता जा रहा है।

अभिभावक अपनी अपूर्ण आकांक्षाओं को बच्चों पर थोपते हैं, इस विषय पर क्या कहेंगे ?

ऐसा एकदम नहीं होना चाहिए। अगर अभिभावक इंजीनियर बनना चाहता था और बन नहीं पाया तो यह जरूरी नहीं कि उसका बच्चा भी इंजीनियर बनना चाहे। हो सकता है कि वह अच्छा खिलाड़ी, अच्छा लेखक, अच्छा वकील, अच्छा चिकित्सक व अन्य कुछ बनना चाहता हो। अभिभावक अपनी अधूरी इच्छा को बच्चों पर न थोपें बल्कि बच्चे के रूझान के अनुसार उसे उस दिशा में बढ़ने में मदद करें।

विद्यार्थियों को क्या गुरुमंत्र देंगे ?

विद्यार्थियों को पूरी ईमानदारी से अपना कर्म करना चाहिए और फल की चिंता नहीं करनी चाहिए। फल तोस्वतः उनके पीछे आयेगा। ईमानदारी व मेहनत से किये गये कार्य का फल अवश्य मिलता है। उनको सही तरह से पढ़ाई करने व उसके समग्र विकास के लिए शिक्षक व अभिभावक दोनों को सहज रूप से प्रयास करना चाहिए। पढ़ने के साथ-साथ खेल-कूद भी आ[illegible]वश्यक है। सिर्फ पढ़ाई नहीं बल्कि पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों को समय के साथ चलना सिखाना चाहिए। ■